कश्मीरी पंडित और सामाजिक परिवर्तन

डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्गा

भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति सम्पूर्ण विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है जहां लगभग 3050 वर्ष ईसा से पूर्व वेदों की रचना की गयी। जिसको समस्त ज्ञान का मूल स्रोत माना जाता है और जिनको मुख्य आधार मान कर अनेक पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने अनवेश्ण कर विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में नये–नये कीर्तिमान स्थापित किये और इस मायावी संसार को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया पर किन्हीं कारणों से हम स्वयं उस ज्ञान के अमूल्य भण्डार का पूर्ण लाभ लेने से वंचित रह गये और अपनी अज्ञानता तथा कायरता के कारण विदेशी कबाईली आक्रान्ताओं के एक लम्बे समय तक शोषण और तिरस्कार का शिकार बने रहे और उनकी गुलामी को झेलते रहे क्योंकि कदाचित हमारी मृत आत्मा न तो कभी इन मानसिक वेदनाओं के प्रति जागृत हुई न ही शारीरिक भावनाओं के विरूद्ध लड़ने की क्षमता की शक्ति का कभी हमारे शरीर में संचार हुआ कि हम एक जुट हो कर डट कर उसका वीरता और साहब के साथ सामना करते। हमने सदा अपने लिबलिबे स्वभाव के कारण इस प्रकार की संकट की घड़ी को प्रभु की इच्छा समझा और उसका प्रतिकार करने के स्थान पर इन असुर शक्तियों का सदैव अपना शीष नवा कर स्वागत किया जिसका दुःखद परिणाम आज हमारे सामने है कि हमको हमारी जन्म भूमि से लतिया कर बाहर निकाल दिया गया है और अब हम अपने ही देश में एक शरणार्थी का जीवन व्यतीत करने को अभिशप्त है।

हमारे इतिहास की यह सबसे बड़ी विडम्बना रही जिसके कारण हम वह आज तक न बन सके जो वास्तव में हमारे समाज को हमसे अपेक्षा थी और हमें होना चाहिये था। इस दुःखद उदासीनता के कारण आज हम एक धोबी के कुत्ते के समान न घर के रहे न घाट के और अपने नेतृत्व के डांवा डोल रवैये और दिशा विहीन विचार धारा के कारण इधर–उधर भटकने को लाचार हैं और अपनी इस दुर्दशा से निकलने का मार्ग ढूंढ पाने में अपने को निसहाय और असमर्थ पा रहे हैं।

यों तो प्रायः कहा जाता है कि कश्मीर में इतिहास लेखन की परम्परा बहुत पुरानी है जिसका सूत्रपात कल्हण पंडित ने किया जिन्होंने छठी और सातवीं शताब्दी के मध्य लिखे गये संस्कृत के ग्रन्थ नीलमत पुराण को अपने इतिहास लेखन का मूल आधार बनाया। जिसमें उन्होंने बहुत ही सुन्दर रूप में कश्मीर के इतिहास को संस्कृत के पद्यों में वैदिक काल से 1149 तक संजोया है। उस महान कवि की यह अमर रचना *राज तरंगिणी* कहलाती है जिसे संस्कृत वाड्मय की मुकुट मणि माना जाता है। इसमें तिथि क्रम से करमीर के शासकों का प्रमाणिक इतिहास है। आठ तरंगों में विभक्त यह महान ग्रन्थ 7826 पद्यों में रचा गया है। जिसमें अनेक घटनाओं का एक सशक्त लेखनी द्वारा बहुत ही मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी चित्रण किया गया है। कल्हण पंडित की सदैव यह अवधारणा रही कि इतिहासकारों को राग–द्वेष से सर्वथा मुक्त रह कर इतिहास की रचना करनी चाहिए जो उनके द्वारा स्वयं लिखित पंक्तियों से परिलक्षित होता है।

श्लाघ्यः स एवं गुणवानराग द्वेष बहिष्कृताः।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भूतार्थ कथने यस्य स्थयेस्येव सरस्वती।।

इतिहास लेखन के इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए जोनराज ने सुल्तान जैनुलआबिदीन (1420–1470) के शासन काल में द्वितीय राजतरंगिणी की रचना की जिसमें 1149 से 1459 तक कुल 23 कश्मीर के शासकों का विस्तार से वर्णन है। इनमें 13 हिन्दू, एक भौट्ट तथा 4 मुस्लिम सुल्तान हैं। इसके पश्चात श्रीवर ने 1459 से 1486, प्रज्ञा भट ने 1486 से 1513 और शुक ने 1513 से 1586 तक क्रमशः तीसरी, चौथी और पांचवी राजतरंगिणियों की रचना की पर किन्हीं कारणों से इस परम्परा को बनाये रखना बाद के इतिहासकारों से सम्भव नहीं हो सका।

अब हमें इस बात पर चिन्तन तथा आत्म मंथन करना चाहिये कि जिस कश्मीर के इतिहास की रचना स्वयं एक कश्मीरी पंडित ने प्रारम्भ की हो उसके संरक्षण के प्रति हम कितने सजग हैं और अपनी इस मूल्यवान धरोहर को सुरक्षित रखने के लिये हम कितने कृत संकल्प हैं। समाज के अन्य वर्ग इतिहास के पृष्ठों में से अपने गुमनाम महापुरूषों को निकाल कर उनको महिमामण्डित करने में संलग्न है और करोड़ों रूपये व्यय करके उनकी पुण्य स्मृति को जीवित रखने के लिये उनके विभिन्न नगरों में भव्य स्मारक निर्माण करा रहे हैं। वहीं कश्मीरी पंडित समाज इसके बिलकुल विपरीत अपने महापुरूषों को न केवल एक दम भुला बैठा है अपितु उनके कार्यों के वर्णन से एक दम पिस्सू की तरह चिटकता है जैसे सांड लाल कपड़े को देख कर भड़क जाता है। हमारे नेतागण भी आपस में तलवार भांजने को कुछ अधिक ही महत्व दे रहे हैं और समाज के हित की जगह व्यक्तिगत हितों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। जो वास्तव में एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।

हम प्रायः अधिकतर अपनी सदियों पुरानी संस्कृति, सभ्यता, परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं तथा इतिहास को तिलांजलि देकर पाश्चात्य सभ्यता के खुलेपन और प्रदर्शन को अपनाकर कुछ अधिक गौरवान्वित अनुभव करते हैं। वे वास्तव में इस विकृत मानसिकता के दूरगामी परिणामों से बिलकुल अनभिज्ञ है। जिसके कारण कश्मीरी पंडित समाज तीव्र गति के साथ विघटित हो रहा है और समाज के अन्य वर्गों की तुलना में हमारे समाज में अन्तर्जातीय विवाहों की संख्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी होती जा रही है। कुछ व्यक्ति अपनी अज्ञानता में इसे प्रगति का सूचक मान रहे हैं पर इस प्रकार की प्रगति करने का क्या लाभ है जिसके कारण आपकी अपनी पहचान सदा के लिये समाप्त हो जाये और आप लू–लू का दसहरा बन जाये समय रहते इस पर गम्भीर चिंतन की आवश्यकता है ताकि इस विकराल समस्या के निदान के लिये उपयुक्त उपाय किये जा सकें। अन्यथा कश्मीरी पंडित समाज को लुप्त होने में बहुत अधिक समय नहीं लगेगा।

प्रिय मित्रों इतिहास इस बात का साक्षी है कि समाज का वह वर्ग अपना वर्चस्व बनाने में सफल हो पाता है जो सत्ता के निकट रहता है और जिसका कोई अपना आदर्श और सिद्धान्त हो एक थाली का बैंगन अपनी कोई अहमियत नहीं रखता। वह जिधर ढाल पाता है उधर ही लुढक जाता है। बिना किसी ठोस आधार के आज तक समाज में कोई भी वर्ग पनप नहीं सका। भारत में हूण, कुशान, मुग़ल इत्यिादी आये पर सत्ता से बाहर होने के पश्चात कहीं छूमन्तर हो गये। कुछ यही दशा आजकल

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कश्मीरी पंडितों की है जिनको हर स्तर पर हाशिये से बाहर रखने का प्रयास किया जा रहा है। इसका एक मुख्य कारण उनका आधार विहीन होना तथा उनमें एक जुटता की कमी हो सकती है। पर अपनी इस स्थिति के लिये काफ़ी सीमा तक वे स्वयं जिम्मेदार हैं क्योंकि वे अपने संस्कारों और विशेष गुणों को संजो कर नहीं रख पाये और ज़माने की तड़क भड़क में बहक गये। वे वह सब किन्हीं कारणें से नहीं अर्जित कर सके जिसके लिये उनके पूर्वज समाज के हर वर्ग से आदर और सम्मान पाते थे और वन्दनीय माने जाते थे।

प्रिय मित्रों समाज के किसी भी वर्ग को वरग़ला कर उसे दिशा विहीन करने में बहुत अधिक समय की आवश्यकता नहीं है पर उस बिगड़े वर्ग को उचित पटरी पर लाने में और उसे उच्च शिखर की ओर अग्रसर करने में कभी कभी पीढ़ियां गुज़र जाती हैं क्योंकि यह प्रक्रिया काफ़ी कठिन है। इसमें द्रढ़ इच्छा शक्ति, आत्मबल और संयम की आवश्यकता होती है। यह स्पष्ट है कि बिना किसी निरधारित लक्ष्य के कुछ प्राप्ति कर पाना बहुत कठिन होता है। सिद्धांत विहीन व्यक्ति का न तो कोई अपना अस्तित्व होता है और न ही वह समाज को कुछ प्रदान करने की स्थिति में होता है। उसके जीवन का न तो कोई ध्येय होता है और न ही कोई आदर्श। वह केवल दूसरे की दया पर निर्भर रहता है और पृथ्वी के लिये भार बन जाता है। इस अवस्था को निशा गोयल ने अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार प्रकट किया है –

फूल की लाश धूल होती है
प्रेम भंवरे की भूल होती है
धूल की गोद में सोने के लिये
हर कली रोज़ फूल होती है

(डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्गा)
मनोहर निवास,
कश्मीरी मोहल्ला,
लखनऊ – 226 003

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com